अनुक्रमणिका

घोषणा पत्र	i
आभार	ii-iii
भूमिका	1 - 2

प्रथम अध्याय : शोध विषय का परिचय **3 - 13**

1.0 प्रस्तावना

1.1 अध्ययन का उद्देश्य

1.2 शोध परिकल्पना

1.3 शोध प्रविधि

द्वितीय अध्याय : आदिवासियों के व्यवसायों का इतिहास **14- 29**

2.0 प्रस्तावना

2.1 आदिवासियों के व्यवसाय

2.2 आदिवासियों के खेती के प्रकार

2.3 आदिवासियों के खेती वर्तमान इतिहास

तृतीय अध्याय : डॉ. अम्बेडकर की कृषि विषयक नीति **30 - 52**

3.0 प्रस्तावना

3.1 भारतीय किसान और डॉ. अम्बेडकर की योजनाएं

3.2 आदिवासी किसान और डॉ. अम्बेडकर की नीति

चतुर्थ अध्याय : आर्वी तालुका के किसानों की समस्याएं **53 - 83**

4.1 आर्वी तालुका में आदिवासी किसान : एक परिचय

4.1.1 आदिवासी समाज का परिचय

4.1.2 आदिवासी किसान और उनकी खेती

4.1.3 आर्वी तालुका के आदिवासी किसानों की कृषि विषयक समस्याएं

4.2 डाटा संकलन / डाटा का विश्लेषण

अध्याय पंचम : निष्कर्ष / सुझाव **84 - 86**

संदर्भ ग्रंथ सूची **87 - 88**

परिशिष्ट **89 - 92**

भूमिका

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में आदिवासी किसानों की समस्याएँ इस विषय पर शोध करते समय आदिवासी किसानों की समस्याओं का अध्ययन किया गया। आदिवासी किसान विभिन्न समस्या से जूझ रहे है। जिनमें शिक्षा संबंधी, स्वास्थ संबंधि, सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक तथा कृषि विषयक समस्याएँ हैं। कृषि विषयक समस्या में रूढ़ि परंपरा के अनुसार खेती करते है, ऋण का अभाव निरंतर बना रहता है। उनकी खेती जंगलों, पहाड़ों में होने से जंगली प्राणीयों का उपद्रव होता हैं, आदिवासी किसान उन्नत बीज, उर्वरक, आधुनिक तकनीकी से कृषि की मरम्मत नहीं करते, बिजली, पानी आदि की समस्या निरंतर बनी एयहट है। आदिवासी किसानों की जो समस्याएँ हैं उन्हें जल्द से जल्द निवारण करने के लिए भारत सरकार, राज्य सरकार, स्वयं सेवी स्वंस्था तथा बचत गुटों द्वारा प्रयास होने की जरुरत हैं।

प्रस्तुत शोद में डॉ. अम्बेडकर द्वारा खोती प्रथा का उन्मुलन, छोटे जीतों की समस्या, चकबंदी संबंधि विचार तथा सहकारी फ़ार्मिंग आदि के बारे में विस्तृत अध्ययन किया गया है। उनके सुझाए गए उपायों पर चर्चा की गई है।

आर्वी तालुका जोकि मेरा शोध का अध्ययन क्षेत्र रहा है। उसके संदर्भ में आदिवासी किसानों का खान पान, रहन-सहन, नृत्य -गीत, नाच गाना, पेहराव, केशभूषा, विवाह, घरेलू सामान तथा आवासों की रचना आदि का विस्तृत वर्णन किया है। अंत में शोध के संदर्भ में निष्कर्ष एवं सिझाव दिये गए है। निष्कर्ष में आदिवासी किसान खेती विषयक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा राजकीय समस्याओं से ग्रसित हैं। उन्हें शिक्षा तथा खेती विषयक आधुनिक अवजारों को सक्त जरूरत है।

सुझाव में आदिवासी किसानों को राष्ट्रीयकृत बाँकों से शून्य ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध करना चाहिए, उन्हें खेती संबंधित कुआ, मोटर पंप, डीझल पंप, स्प्रे-पंप तथा तुषार सिंचन संच आदि वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए उनके घर जाकर योजनाएं समझानि चाहिए। आधुनिक तकनीक से खेती करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

प्रस्तुत शोध भविष्य में आदिवासी किसानों के लिए कारगर साबिर होगा ऐसी आशा है।